Book-Post

To,

If not delivered please return to:

EDITOR, THE VEDIC PATH, P.O. Gurukul Kangri, (U.P.) 249404. त्रम् भू:शो॰

उत्र स्पाणकाल् मीवनकणियाने स्वयं द्वः पर्भणात्वा चिक्रालप्रणात्रम्नानन वरम्नमहापात्रपर्का वर्द्देनप्रताः । स्वारवह्यामिमनवत्माप्रविधावाः द्वीवाः द्वीवतरस्मिमिमनवत्माप्रविधावः । स्वारवह्यान् । स्वरवह्यान् । स्वारवह्यान् । स्वारवह्यान् । स्वारवह्यान् । स्वारवह्य स्त्याप्याम वे वे द्र्यं प्रतिप्रातिनाः गजहागति। सबीता हमन व्यक्ति पाद्यः च प्राथामा वे वे द्र्यं प्रतिप्रातिनाः गजहागति। सबीता हमन व्यक्ति पाद्यः च प्राथामा वे द्र्यं प्रतिप्राति व स्विप्राति प्रतिप्राति व प्रतिप्राति व प्रतिप्राति व प्रतिप्राति व प्रतिप्राति व प्रतिप्राति व प्रतिप्रति व प्रति व क्साविताष्ट्रमी १ परामित धारितंत्रीका प्रवित्तेत्रीके हेर्ने विस्पेती सापुत्रपुत्रे किन्त्यती १२ सपत्या कारणात्मा एवर विश्व विश्

दिन्ता ए शोकी तान पाषि एवं इस विषुत्र तानि हिनातम पूर्व वित्र मंत्रा प्रेष्ट्र नारोच नायते ए तर्व व शामना शोब देपा हिन्दु के प्रेमा के नेपा पेन मे ता तुप्र मानु प्रमान पिन के ए भद्र हान अ एवं तिमान म स्यन्येनेट्यो के मंग वं प्राचं इस ता विच्याचिए में ति कण रें - अप रण यो मह पाच का लिका वे विच्याचित्र के कि कण रें - अप रण यो मह पाच का लिका वे विच्याचित्र के कि कण रें - अप रण यो मह पाच का लिका वे विच्याचित्र के विच्याचित्र के विच्याचित्र के प्राचं के प्र हिणा के स्वयं का येन मान में इं जी के भागपा पर है विष्णा निर्देश में निर्देश में निर्देश में भी किया में किया क्तरहाला चेनमास्त्रते ३५कालोप्रसादेने क्र वंद्वारयेपरे मिते में इसने प्राप्त स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन नाम्यलेक नाम्यमानारे भिः कंचा प्रभाने विसते या है स्वापा प्रकान से यथायाति स्वतं करण्यासाला स्वापन स्वापन स्वा लतः कामित्राप्युक्यवण्याप्राक्तिः प्रदापयेन वास्याचापमहेतिक एमपा जेवणे वेकान स्वास्थावणे वास्यान

सपदंचेव कार्यन् ३८ ता विकामित्वतीं व्या सावतीय जनाताः वर्षातिविधाविद्यीः प्रन्पवृतीः मनागनाः ३५ तम्ब्रीविधाविद्यीः प्रन्पवृतीः मनागनाः ३५ तम्ब्रीविधावेन स्वात्रा विधावेन स्वात्रा मनीवि तम्बर्गिविधाने न सपुत्रा तं भविद्यति भरद्याना व्यापे विवेदने व इतमाने ५५ ए तद्व तिधावेन स्वत्र प्रतामनीवि नः सपुत्रेः सदिनासात्र तत्वालेन सभवतः ५१ शाका स्वात्रा साम्रास्त्रा साम्रास्त्र स्वता वेत्रे वास्मीपृत्या स्यानामकीतिना ४२ प्रात्नास्य वाः सर्वेनार्राणयमालभवेन सर्वेनाश्रियमाञ्चातिन्द्रोत्रीमध्य प्रजान्यो जान्ययो जान्यविदेशवनस्त्रायः भर्तः सम्बेषणा ताप्रनः की तिप्रतासन्त ४७ कातिकस्पासितप्रेत्रस्त्रम् क्लिकावृतं नकरे विचयानारी विश्वमाधि गर्याते ४५ वं धावध्व ही नाच दे शीला करे शात्या ना यतेना वस देहा बुतही माधिमध्य ४ ह एत इत प्रसादेन का लीकि विन दास्पति देरिइना प्रांत्र धर्म प्रावला के तेपाल ये ४ ३ इति मान्यसम्बन्धितापार्याने स्त्रोति एमी वृत्व पार्यमा प्रभाव। रोम मणा तिए मी वृत्व प्राविधः मान्यसम्बन्धित गर्णे प्रति विद्या में बत्य प्रति हो स्वयं स् रिछा ग्रेम स्वाय जो में मन के ने का माने कि वा निर्मा के निर्माण वाचात्राद्रे प्राम्यान्यात्यां सर्वतिहलाः सर्वते स्वाकाष्त्रकानम् कालिदेविद्रहाग्योहतिक्तेपावा राकाली दे अनुमः इतिमेत्रेण संधानधे प्रधानस्त्रे द्वारिक प्रधाने वे द्वाति लेक्ट्यारि द्वाति से प्रभावा शिरदेमाति किंडालि सिर्वेण वेष्णित सपवार्यना श्रीशामाप घरेट विवेजा बाँडे र समें हरिद्र ने प्राचित का ली देविन मोस्तिन

A

भ्यावषडे के हो हो ते हा ता निता वाय निवाय निवाय में निता ने हो निता निता ने हुए निता ने हुए निताय निवाय निवा

काणों वा बहु रें हैं। जे से अनंत्र कि वा वह स्वत्य प्रकार में से अपनिष्ठ के से के स विधने कित्य त्रितं ने विश्वनापं क लिक स्माप्त्र ध्या प्रिया लिति हर रहे हो हो ने कर श्रतण णिवनः इहाम्याद्रातिए मंनमाभगवत्ये आदेवीम् करियापे वमः इत्येन वामा के उभापनन गंधाहिवचा पचारेण ग्रेहों ही जेसः पुनाकपाल बनमः इति ह्वांने शहरोही जेसे शिवापन में प्रजन मिन्नित्येनमः ऽहांचा रोउपायवायुम्तियनमः वाय्या ग्रेभीमायाकाश्वस्तिवनमः प्रतीचा रोषश्चित्वयनमानम्तियेनुमः नेष्ट्रत्या ग्रेमहादेवायक्षामम्तियेनमः दक्षिणसानमः ग्रेईशाज्ञा प्रमाण वाला का निवासिय के प्रमाण के तिया के त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विववं

गाधारे देवे शिवना गाति व्यक्षेत्र वासहेवंत पागु हो जे घटेवं विला चून सर्व ते विना सेत्या है। शिवस र्वत्रिक्यसेत्रत्रमः।श्रीवायोगमेत्रेत्रेणां हार्यात् मुप्ते मपाने ग्रह्माति यह नाटवर स्तेजल सम्बंधवत नतागीरीशाजिलमा प्रयेत गोरीचव लेगा श्रेमाः स्त्वासाचेण अस्तितः ई अरउनी शें जारात्म नेनमत्त्र भें नमाविद्व स्था सने न माः विगनण पत्र पाती ता पत्र नमः विमानण पत्र पत्र ता वा विमानण विस्ति के बाता विस्ति के साम कि समित्र स्था विमानण विस्ति के साम कि समित्र स्था वा विस्ति के साम कि समित्र समित यदितिर्णुयधार्वसाप्रितेन्त्रः महादेवायेतामायस्य सतायनमास्त्रे अपाययनमानाय नसस्तक मेंग्रेतिन चारिवानावित ग्राताय स्वयाप जनका तेन में भ्रायान देश वा शिनाधी नप्रविद्धार प्राचीन के प्रविद्धार प्राचीन के प्राचीन के प्रविद्धार प्राचीन के प्रविद्धार प्राचीन के प्रविद्धार के प्रविद्धार प्राचीन के प्रविद्धार नेत्रातिः परिष्यः प्रमर्वे योगमला देवावर्दादे प्रवेहारकः वाड्सनः काप्सभूतेपात्कवाप चातक वित्यमाहे नहे वे प्रानाप्राण तमे राष्ट्रम नमः प्रावायम्। मायणे व ब्रापेय दिने ने हिल्ला महोकालगणायुक्तायप्राभवे नमादेवाधिदेवाय नमाभक्तिप्रयायचे बाहिमासे वहः विप्रागी जाकाणिका है। देव नाजायमप्राभयसारिकार सकत ततान्यस्थिव बचच सहरिता समी उपाठ क्यात् स्यनीरानन प्रनः प्रदेशिला देत्तं तुउपायुने नत्रशाष्णिदराने चं नीयवारः क्यापितिना होतासप्ज्य अभ्यय्वतिध्यवप्जनसागतासः ज्यम्तर्यम्बर्वितिरितालयातं रासाचेव रिएशियायिनमः देवेनाद्याणियनमः देवेनः उत्ययाधिमाने करोप सं वते देवेपातिचा मानकगाजा ऽम्बर्धामान्तेत्रत्मल मास्त्रतिष्ठिष्ठनन संगता ति दिपूर्वक पीचर्यित महमारामापकरण राजा विछिद्देवता कित्यादि दानप्रतिष्ठण सर्वे च छत्रदाने उपान तादानं पात्रदानं च स्तराने का क्षासनकाष्ट्रपादुकादानं च जनदानं च सीदानं का स्पात्रस्प न्पित्तंत्रात् ३१ पूर्व मोन्तः ३ वा तालमाजनसेन त्यः ततः प्रति नादानं रायापनरणिहरणप्रयोपनिमायनमः इतितालदानं यतिग्रहीताका दातित यत्यदेशीयायक सेविहेदपारग्रायबाह्याण्याशिवपतिमासविवस्तेषते पार्वत मंत्रहीनं त्रिण्हीनं असितिन महस्रा पत्रिनं मणहे वपरिप्तिन दस्त में निर्मा चात्रलिह्लाह्वविसर्ववृत् ततः कलपात्रलेना प्रचिवविष्त्रत्रान्याभिववंकपात्र अधिदा वधारण बती प्रशासिकह विष्णेत्र नीत बनिते । स्वभान ने कृषीन बनलाग ता कि जारी ना से लेगाभित्रहिल्लिहणत् इतिश्रीभविषा तरे पुराले महादेवणवित्ती सेवादे मिन्नवित्ववित्रा स्वयमहिनीयाविधिः - उज्जेशक्षिणप्राभपगद्वे वेययमं कानेकता मानजन्यायमंती कनपायित क्र नेश्र सिह ती या पुलित सिलितायमः विष्टितः विचरेह एस से प्रकातवा छिन प्रथमाश्रावतामाहितयामा रूपहे । या तनी पात्रपुत्र माहिचतुर्पाका तिके भवत सावते क लोग नामन्यामाईचित्रनं लामाणि नेप्रतं गायानि वेयान्यतामता कार्तिके शक्तपदी तृहिन याणार्यधिष्टिर यमायम् नपा एवं मोनितः सगारे वितः समापमिति ये प्रेरित स्वापमिति यो प्रेरित स्वाप्ति स्वाप्ति स्व विन्य हे पार्पेन भेक्ता नरः यन्त्रेन भित्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति व जाक्र वी सह जापाय मितिन्याह सातः परं सर्वा में भितिहरू हो होता वो वतं वह ने धन्ययास ना प्रवास वका नार्थमा धर्क परवारियो यमुनया प्रमानहैक से भी जिता निज करात्वार साह है न नस्पास्वसाक रतलाहिहयो। अनित त्रापाति रत्नधनधान्य मनुत्रमं सः पातुमा जयते नारी श्रातरेषु गांके तियो अर्थये द्वापिता व हो निता वेथया मात्र्यात आंत्रायुः होयो नू नं नभवे न विद्या यमें विद्यारे प्रयमद ना अप्रत्येत सुद्या आव्यवान या प्रत्येत सुद्धा आव्यवान या प्रत्येत स्वत्येत्र स्व अर्थि मंत्रे ते ए सिहिमार्न हे ज्याशीहरत्यमान का हो के परा मरेश आहे तिया के नहे ने प्रत्येत्र ग्रहाण्याण्मगवन्त्रमते धर्मगननमत्त्रभ्यनमत्त्रयम्भागगननाहिमानि चरःसादस्य युत्रमिति ने कार्तिकारिती या वाष्ट्रकायां मात्रपूर्ण में यानक्यारि ने प्रवित्र मात्र संप्रते मात्र असे स्टू में स्टू मात्र में स्टू मे स्टू में स्ट

1